IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन''

"A Study of Teaching Attitude among Prospective Teachers Belonging to Scheduled Castes and Scheduled Tribes"

***Anil Kumar, **Dr. Harlal Bajiya**

*Rsearch Scholar, Department of Education, ggtu, Mahi Dam Rd, Badvi Bricks, Badvi, Banswara, Uplaghantala, Rajasthan 327001, India

**Research Guide, Department of Education, ggtu, Mahi Dam Rd, Badvi Bricks, Badvi, Banswara, Uplaghantala, Rajasthan 327001, India

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है। भावी शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का आकलन करने से अन्य विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान की जा सकती है। इस हेतु शोधार्थी ने शोध के मुख्य उद्देश्य में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करने हेतु निर्धारित शून्य परिकल्पनाओं के परीक्षण में शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के उपकरण का प्रयोग किया है। इसका प्रशासन अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों में राजस्थान के झुन्झुनू जिले से 600 भावी शिक्षकों पर किया गया। प्रमुख सम्प्राप्तियों में पाया कि अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है। आँकड़ों के सकंलन हेतु शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मापन – डॉ. विमल विदूषय व नंदकिशोर द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी–मान, क्रान्तिक अनुपात मान, सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्दावली : अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, भावी शिक्षक।

प्रस्तावना

मनुष्य स्वभावतः एक सामाजिक प्राणी है जो समाज में रहकर नियम, मूल्य, अनुशासन तथा संस्कारित व्यवहार के माध्यम से अपना जीवन व्यतीत करता है। मनुष्य के इस अनुशासनमय एवं उद्देश्यपूर्ण जीवन में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी गई है। शिक्षा केवल व्यक्तिगत विकास का साधन नहीं, अपितु मानव जीवन की दिशा एवं दशा निर्धारित करने वाला कारक है। जिस प्रकार वीणा का स्वर तभी मधुर होता है जब उसके तार सुगठित एवं संतुलित हों, उसी प्रकार मानव चरित्र तभी दिव्य, मूल्यनिष्ठ एवं सुसंयोजित बनता है जब वह उचित एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षा से संस्कारित हो।

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा को ''सा विद्या या विमुक्तये'' की संकल्पना के माध्यम से मानव को अज्ञान, संकीर्णता, अविवेक तथा बंधनों से मुक्त कराने वाली शक्ति माना गया है। प्राचीन काल में भारतीय ऋषियों ने शिक्षा को तीसरे नेत्र की उपमा दी, क्योंकि शिक्षा व्यक्ति की दृष्टि, बौद्धिकता, चेतना एवं विवेक जागृत करती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति का संज्ञानात्मक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक, भाषाई तथा व्यावहारिक विकास संभव होता है। यह न केवल व्यक्तित्व का निर्माण करती है, बल्कि जीवन में समायोजन, आत्मनियंत्रण एवं सकारात्मक व्यवहार को भी प्रोत्साहित करती है।

21वीं सदी में शिक्षा व्यवस्था वैश्विक परिवर्तन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, आर्थिक उदारीकरण, प्रतिस्पर्धात्मक प्रवृत्ति तथा उपभोक्तावाद के प्रभाव से निरंतर परिवर्तित हो रही है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं, बल्कि कुशल वैज्ञानिक, अभियंता, नेता, शिक्षक, नीति–निर्माता तथा मूल्यनिष्ठ नागरिक तैयार करना है। परंतु सामाजिक परिवर्तनों के इस दौर में मानवीय संवेदनाएँ, सहानुभूति, चारित्रिक ईमानदारी, सहयोग, करुणा एवं मानवीय मूल्यों का क्षरण भी देखा जा रहा है।

आर्नोल्ड हायन बी का यह कथन अत्यंत उपयुक्त प्रतीत होता है–

"यदि शिक्षा मूल्यों से विहीन हो जाए तो समाज की प्रगति विनाश का आधार बन जाती है।"

भारत मूल्यप्रधान एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राष्ट्र है। यहां शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि व्यक्ति को उपयोगी, उत्तरदायी एवं सामाजिक रूप से सशक्त बनाना है। इसी संदर्भ में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि शिक्षक सामाजिक परिवर्तन, मूल्य संरक्षण एवं चरित्र निर्माण का प्रमुख माध्यम है।

विशेषकर अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग, जो ऐतिहासिक, सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से वंचित रहे हैं, आज शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में सम्मिलित होकर शिक्षा क्षेत्र में अपनी भूमिका मजबूत कर रहे हैं। इन वर्गों के भावी शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति (Attitude towards Teaching) का अध्ययन इसलिए आवश्यक है क्योंकि उनकी यह अभिवृत्ति भविष्य में उनके शिक्षण व्यवहार, विद्यार्थियों के प्रति संवेदनशीलता, कक्षा प्रबंधन, पेशेवर प्रतिबद्धता तथा शिक्षक के रूप में सामाजिक प्रभावशीलता को निर्धारित करती है।

एक सकारात्मक एवं प्रेरक शिक्षण अभिवृत्ति न केवल शिक्षक की कार्यक्षमता बढ़ाती है, बल्कि सीखने वाले विद्यार्थियों में सीखने की जिज्ञासा, अनुशासन, आत्मविश्वास तथा मूल्यनिष्ठ व्यवहार का विकास भी सुनिश्चित करती है। अतः अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति को समझना वर्तमान समय में शोध एवं शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र का अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है।

उपरोक्त संदर्भों को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने अपने शोध कार्य हेतु "अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन" विषय का चयन किया है, ताकि भावी शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों, नीति निर्धारण, प्रशिक्षण रणनीतियों तथा शैक्षणिक योजनाओं को व्यवहारिक दिशा प्रदान की जा सके।

समस्या कथन :–

''अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन''

"A Study of Teaching Attitude among Prospective Teachers Belonging to Scheduled Castes and Scheduled Tribes"

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ :–

1. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का क्षेत्र एवं न्यादर्श :

समष्टि में शोधार्थी द्वारा न्यादर्श में राजस्थान राज्य में शोध कार्य के लिए राजस्थान के झुन्झुनू जिले के अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों को शामिल किया है। शोधार्थी द्वारा न्यादर्श हेतु झुन्झुनू जिले के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् 600 भावी शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि का प्रयोग इसलिए किया गया क्योंकि इसका यह अभिप्राय है कि हमें निश्चित चयन विधि पर विश्वास करना है यही यादृच्छिक कहलाती है जो बहुत बड़े समूह या जनसंख्या को बिना किसी पक्षपात के उपलब्ध करा सके। इसलिए शोधार्थी ने यादृच्छिक विधि का प्रयोग करके न्यादर्श का चयन किया।

शोध की विधि एवं प्रक्रियाएं :

शोध की प्रकृति व सर्वेक्षण विधि की उपयोगिता के आधार पर शोधार्थी ने प्रस्तुत अनुसंधान में आँकड़ों के एकत्रीकरण हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति – डॉ. विमल विदूषय व नंदकिशोर का प्रयोग किया है। अध्ययन में प्रयुक्त सर्वेक्षण विधि तथा मानकीकृत उपकरण का चयनित विद्यार्थियों पर प्रशासन करना एक महत्वपूर्ण सोपान है। इस हेतु झुन्झुनू जिले में स्थित महाविद्यालयों के संस्था प्रधानों (प्राचार्य/प्राचार्या) से शोधार्थी द्वारा व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क किया गया। उन्हें शोधकार्य के उद्देश्य से अवगत करवाया और उपकरण के प्रशासन की अनुमति प्राप्त की गई। तत्पश्चात् निर्देशित कक्षा में जाकर उपकरणों में दिये गये निर्देशों की अक्षरशः पालना करते हुए शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति की अनुसूचि का प्रशासन किया गया। तत्पश्चात् इन उपकरण की जाँच अंकन योजना के अनुसार की गई। इस प्रकार उपकरण की सहायता से प्रदत्तों एवं सूचनाओं को एकत्रित किया गया तथा उन्हें व्यवस्थित, वर्गीकृत व सारणीबद्ध किया गया। इन आंकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या प्रस्तुत की गई

है। परीक्षणों के मूल प्राप्तांको का विश्लेषण करने हेतु (N) मध्यमान, प्रमाप विचलन (SD) एवं टी–मान, क्रान्तिक अनुपात मान (CR–Value), की गणना की गई।

परिकल्पनाएँ सं. 1 – अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है –

तालिका

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का प्रतिशत

भावी शिक्षक	N	M	SD	SED	D	df	C.R.
SC	300	96.58	11.06	0.92	0.51	598	0.55
ST	300	97.09	10.09				

** 0.05 **सार्थक स्तर**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हैं कि **अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति** प्राप्तांकों की गणना के आधार पर **भावी शिक्षकों में अनुसूचित जाति** के प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 96.58 तथा **अनुसूचित जनजाति** का मध्यमान 97.09 प्राप्त हुआ एवं **अनुसूचित जाति** का प्रमाप विचलन 11.06 तथा **अनुसूचित जनजाति** का प्रमाप विचलन 10.09 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों एवं प्रमाप विचलनों के आधार पर गणना की गई है जिसमें क्रान्तिक अनुपात मान 0.55 प्राप्त हुआ। जो कि सार्थकता स्तर 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता का मान 1.98 गणना द्वारा प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान सार्थकता स्तर के मान से कम है। अतः उक्त परिणाम के आधार पर **परिकल्पना–2 '' अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति** में सार्थक अन्तर नही है।'' अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

ग्राफ

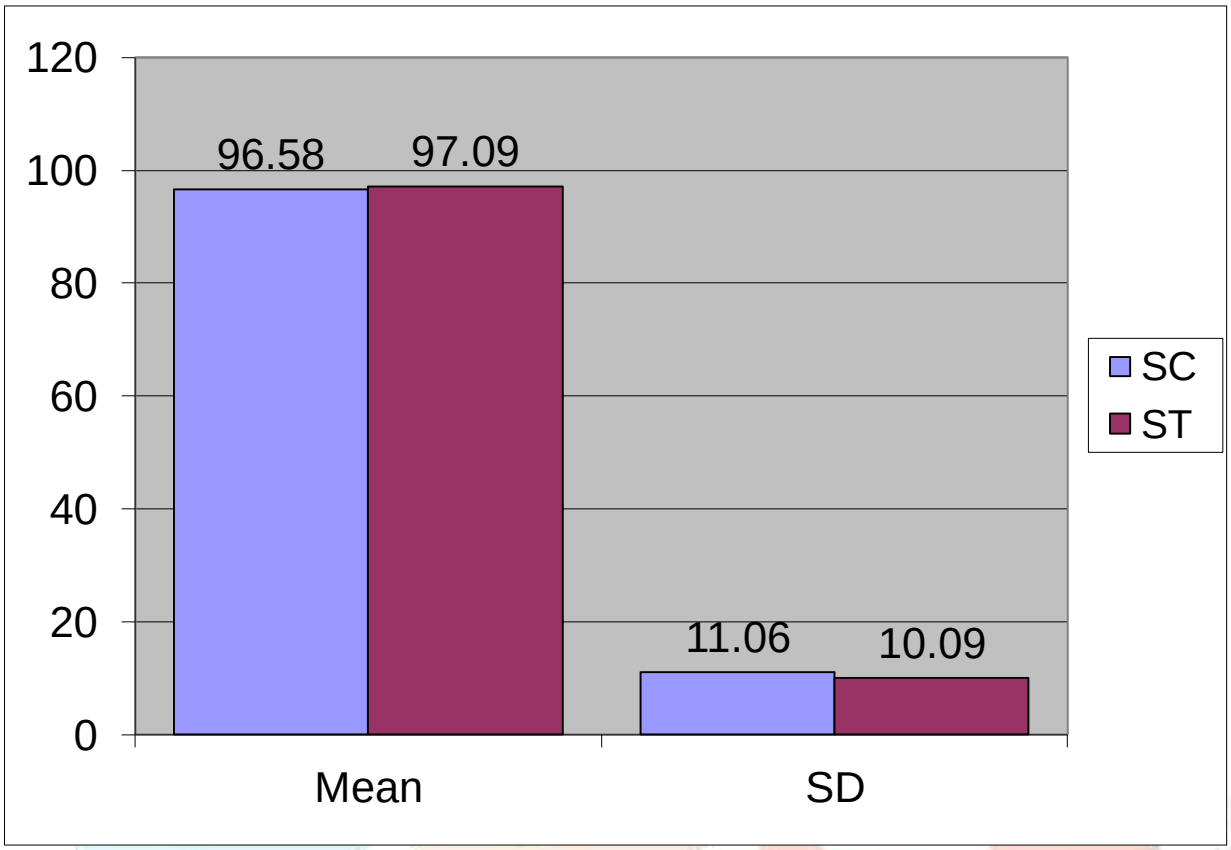

हिन्दी संदर्भ साहित्य

- **जैन, आर. (2020)** शिक्षक–प्रशिक्षण एवं व्यावसायिक कौशल विकास, भोपालः मधुर प्रकाशन।
- **चतुर्वेदी, एस. (2020)** अनुसूचित जाति एवं जनजाति के शैक्षिक अधिकार एवं नीतियाँ, नई दिल्लीः शिक्षण संसाधन केंद्र।
- **शुक्ला, एल. (2020)** समावेशी विद्यालयी वातावरण और छात्र विकास, वाराणसीः सारस्वत प्रकाशन।
- **ठाकुर, जे. (2020)** भारतीय शिक्षक शिक्षाः चुनौतियाँ और सुधार, दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।
- **मिश्रा, एस. (2020)** विद्यालयी माहौल और शैक्षणिक उपलब्धि, पटनाः ज्ञानभारती।
- **अवस्थी, वी. (2020)** सामाजिक व सांस्कृतिक विविधता और शिक्षा, भोपालः भारतीय पुस्तक गृह।
- **शर्मा, ए. (2020)** उच्च शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता, जयपुरः राजस्थानी अकादमी।
- **शर्मा, रामेश्वर. (2021)** शिक्षक शिक्षा के सिद्धांत और व्यवहार, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- **यादव, डी. एन. (2021)** भारतीय समाज और सामाजिक संरचना पटनाः विद्यार्थी पुस्तक भवन।
- **मेहता, के. एन. (2021)** भारतीय शिक्षा प्रणाली और समावेशी दृष्टिकोण, लखनऊः ज्ञानदीप प्रकाशन।
- **द्विवेदी, एम. (2021)** शिक्षक व्यक्तित्व और सामाजिक संवेदनशीलता, जयपुरः एच. आर. पब्लिशर्स।
- **सक्सेना, आर. (2021)** शिक्षा में मानवाधिकार और समानता, नई दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट।
- **रानी, एम. (2021)** नैतिक शिक्षा और मूल्यबोध, मेरठः वचन प्रकाशन।
- **सेन, पी. (2021)** अल्पसंख्यक एवं वंचित वर्ग की शिक्षा, कोलकाताः एकता प्रकाशन।